P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-6* February- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कोटा जिले के माध्यमिक स्तर पर अनुत्तीर्ण रहने वाले विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि तथा पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन

Comparative Study of Intelligence Quotient and Family Environment of Students who failed at Secondary level of Kota District

सुरेश चन्द्र मालव
शोधार्थी
शिक्षक–प्रशिक्षण विभाग,
कॅरियर पॉइण्ट यूनिवर्सिटी,
कोटा, राजस्थान, भारत

अनामिका राठौर
प्राचार्या,
चिल्ड्रन टी.टी.कॉलेज,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र में कोटा जिले के माध्यमिक स्तर पर अनुत्तीर्ण रहने वाले विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि तथा पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि शहरी व ग्रामीण विद्यालयों के अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि तथा पारिवारिक वातावरण का अध्ययन किया जाए तो ये दोनो एक दूसरे को प्रभावित करते है या नहीं। अतः उपरोक्त से शोधकार्य की उपयोगिता, महत्व, अनिवार्यता तथा औचित्य स्पष्ट हो जाता है।

शहरी व ग्रामीण छात्रों के बीच सिर्फ विकास या दिमाग का ही नहीं पर प्रारम्भिक वातावरण कौशल, सीखने की क्षमता, बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता और विभिन्न सुविधाओं की पहुँच एक बड़ा अंतर है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु कोटा जिले के रावतभाटा व इटावा के 5 निजी व 6 राजकीय विद्यालयों को लिया गया है। कक्षा 9 के बालकों को ही न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है , जो यादृच्छिक विधि से चुने गए है। अध्ययन में पाया है कि छात्रों की बुद्धिलब्धि तथा पारिवारिक वातावरण दोनों ही एक ही सिक्के के दो पहलू है। जिन बालकों की बुद्धिलब्धि तथा वातावरण विद्यार्थियों के अनुकूल है उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च होगी तथा माध्यमिक स्तर पर अनुत्तीर्ण रहने वाले विद्यार्थियों की संख्या में कमी की जा सकती है तथा उन्हे अनुकूल वातावरण प्रदान करके अधिक से अधिक सफलता दिलायी जा सकती है।

In the presented research paper, a comparative study of the intelligence and family environment of the students living at secondary level in Kota district has been done. It is known from the study that if both the intellectual and family environment of students who fail in urban and rural schools are studied, then they affect each other or not. Therefore, from above, the usefulness, importance, inevitability and rationale of research work becomes clear.

There is a big difference between urban and rural students, not only development or brain but the initial environment skills, learning ability, availability of basic facilities and access to various facilities.

For the study presented, 5 private and 6 state schools of Rawatbhata and Etawah of Kota district have been taken. Only children of class 9 have been included as sample, chosen by random method. The study has found that both the intellectual and the family atmosphere of the students are two sides of the same coin. Children whose intelligence and environment is favorable to the students, their educational achievement will be high and the number of students who fail at secondary level can be reduced and they can be given maximum success by providing favorable environment.

मुख्य शब्द : माध्यमिक स्तर, अनुत्तीर्ण विद्यार्थी, बुद्धिलब्धि, पारिवारिक वातावरण
Keywords : Secondary Level, Failed Students, Intelligence, Family Environment.

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-6* February- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रस्तावना

विद्यार्थी राष्ट्र के भावी करणधार है। विद्यार्थी के मानसिक, शारीरिक, स्वास्थ्य पर अधिकाधिक ध्यान प्रत्येक परिवार व राष्ट्र का कर्तव्य है। बच्चे उपयुक्त वातावरण में पले,पढ़े व आगे बढ़े। वर्तमान में बालक का पीछे रहना राष्ट्र की बहुत बड़ी क्षति है। शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी की प्रगति नहीं होना, अनुत्तीर्ण हो जाना आदि के कई कारण हो जाते है–स्वंय के प्रयत्न का अभाव, पारिवारिक स्थिति का ठीक नहीं होना, विद्यार्थी के परिवार का वातावरण अनुकूल नहीं होना, उसमें सोचने–समझने की शक्ति का कम होना, अधिगम की कमी, स्वाध्याय आदतों की कमी आदि ऐसे कई कारण है जिससे विद्यार्थी का शैक्षणिक विकास नहीं हो पाता है। बालक जन्म से ही कुछ सहज योग्यताएं लेकर उपयुक्त उद्दीपन नहीं प्रदान किया जाता है। तो वे योग्यताएँ अपने प्रदत्त स्वरूप में विकसित होती है। बालक का अधिकांश समय परिवार के साथ व्यतीत होता है तथा घर उसकी प्रथम पाठशाला होती हैं, जहाँ से सीखना प्रारम्भ करता है ऐसी अवस्था में यदि उसके लिए उपयुक्त पारिवारिक वातावरण न बनाया जाए तो बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता तथा विद्यार्थी जीवन में वह उच्च उपलब्धियों को प्राप्त नहीं कर सकता।

संक्रियात्मक शब्दावली

बुद्धिलब्धि

ब्लण्ड्स एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशन के अनुसार – ''जनसंख्या का दो–तिहाई भाग औसत के आस–पास 85 से 115 बुद्धिलब्धि के मध्य होता है। इन्हें बुद्धिलब्धि की दृष्टि से सामान्य श्रेणी में रखा गया।

कील एवं ब्रूस के अनुसार

''बुद्धिलब्धि यह बताती है कि बालक की मानसिक योग्यता में किस गति से विकास हो रहा है।''

पारिवारिक वातावरण – डॉ. मजूमदार के अनुसार परिवार की परिभाषा इस प्रकार है – ''परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक मकान में रहते है और जिनमें रक्त का सम्बन्ध होता है, परिवार की उन समस्त सामाजिक भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों एवं उनके जीवन, व्यवहार, स्वभाव, अभिवृत्ति, विकास उपलब्धि तथा प्रेरणा पर प्रकाश डालता है।

अनुत्तीर्ण विद्यार्थी एवं शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तुत शोध में अनुत्तीर्ण वे है जो पिछले वर्ष दसवीं कक्षा की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए जिन्होंने बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षा में 36 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त किये है। वर्तमान प्रति स्पर्धात्मक वातावरण में किशोरावस्था के बालकों पर बढ़ते तनाव व दवाब के कारण उसके परीक्षा परिणामों पर दुष्प्रभाव पड़ता है, असफलता उन्हें कहीं का नहीं रखती जिससे उनके मस्तिष्क में अनेक विचारों का द्वन्द्व होता है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर बुरा प्रभाव पड़ता है और उनकी बुद्धिलब्धि प्रभावित होती है। इसलिए बालकों की बुद्धिलब्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले वातावरण के प्रभाव पर अध्ययन किया गया।

साहित्यावलोकन

दीक्षित (1983) – ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के परिवारों के विद्यार्थियों की तुलना में शैक्षिक उपलब्धियों में उच्च पाए जाते है।

निधि बाला (2000) – ने माता–पिता के व्यवसाय व पारिवारिक आय का बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध विषय पर अध्ययन किया।

सैनी एस (2005) – माता के कामकाजी व गैर कामकाजी होने का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

मुरली (2006) – विभिन्न श्रेणियों के विकलांग बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य तुलनात्मक अध्ययन।

सरोज आनन्द एवं सुमनलता (2009) – अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार छात्रों के प्रत्यक्षीकृत माता–पिता के व्यवहार दुश्चिन्ता एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. समग्र अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का पता लगाना।
2. अनुत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि का पता लगाना।
3. अनुत्तीर्ण छात्राओं की बुद्धिलब्धि का पता लगाना।
4. अनुत्तीर्ण छात्र–छात्राओं की बुद्धिलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. अनुत्तीर्ण छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण के माध्यमान के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु जनसंख्या के रूप में ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं को लिया गया है। न्यादर्श के रूप में माध्यमिक विद्यालय के 240 छात्र–छात्राओं को यादृच्छिक प्रतिदर्श की देव–निर्देशन विधि द्वारा चयनित किया गया है।

शोध अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य को निम्न रूप में परिसीमित किया गया – शोध कार्य हेतु कोटा जिले के रावतभाटा तथा इटावा क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय से छात्र–छात्राओं का चयन किया गया। जो 10 वीं कक्षा में 2019 की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोध में साधारणतः दो (प्रकार) उपकरण प्रयुक्त लिए गए है –

1. मानकीकृत उपकरण
2. अमानकीकृत उपकरण

बुद्धि के लिए सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षा

डॉ. श्याम स्वरूप जलोटा सामूहिक बुद्धि परीक्षण हेतु डॉ.एस.एस.जलोटा और पारिवारिक वातावरण के लिए स्वनिर्मित उपकरणों का चयन किया गया। डॉ. जी.पी.

भहरी तथा डॉ. जगदीश चन्द्र सिन्हा द्वारा निर्मित किया गया है।

शैक्षिक बुद्धिलब्धि

वार्षिक परीक्षा परिणाम।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में निर्देशित विधि का अनुसरण किया गया है तथा निर्देशित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कक्षा–कक्ष वातावरण में उपकरणों को प्रयुक्त कर वांछनीय आंकड़ों का संकलन सर्वेक्षण विधि से किया गया है, पारिवारिक समंक सूचि के लिए मानवीकृत उपकरण डॉ. जी.पी. भहरी तथा डॉ. जगदीश चन्द्र सिन्हा द्वार निर्मित किया गया है।

सांख्यिकी विधियाँ

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विधियों के अन्तर्गत निर्धारित उद्देश्यों के सन्दर्भ में मध्यमान, मानक विचलन, टी–मूल्य, प्रतिशत विधि का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध के चर

प्रस्तुत शोध में निम्न चर है।

1. **स्वतंत्र चर –** अनुत्तीर्ण छात्र व छात्राएँ ।
2. **परतन्त्र/आश्रित चर –** बुद्धिलब्धि व पारिवारिक वातावरण।

समग्र अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का पता लगाना

समग्र अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि ज्ञात कर निम्न तालिका में विश्लेषण किया गया है –

सारणी क्रमांक 4.1

समग्र अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण

बुद्धिलब्धि के आधार पर श्रेणीकरण	सम्रग विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण	
	संख्या	प्रतिशत
प्रतिभावान/प्रतिभाशाली	2	0.83
अत्युत्तम	10	4.17
तीव्र	16	6.67
औसत	20	8.33
कम कुशल	31	72.92
मंद	46	19.17
उत्तम	15	6.25
योग	240	100.00

समग्र अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का प्रतिशतवार विवरण इस प्रकार है –

1. प्रतिभावान 0.83 प्रतिशत विद्यार्थी 4.17 प्रतिशत अत्युत्तम 6.25 प्रतिशत उत्तम प्रतिशत 6.67 तीव्र बुद्धि के एवं 8.33 प्रतिशत औसत बुद्धि के विद्यार्थी पाए गए!
2. कम कुशल बुद्धि के 12.92 प्रतिशत विद्यार्थी पाए गए।
3. अधिकांश विद्यार्थी मंद बुद्धि के 19.17 पाए गए।

अनुत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि का पता लगाना

अनुत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि ज्ञात कर सारणी 4.2 में विश्लेषण किया गया है –

सारणी क्रमांक 4.2

अनुत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण

बुद्धिलब्धि के आधार पर श्रेणीकरण	समग्र अनुत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण	
	संख्या	प्रतिशत
प्रतिभावान	1	0.83
अत्युत्तम	8	6.67
उत्तम	7	5.83
तीव्र	11	9.17
औसत	12	10.00
कम कुशल	15	12.50
मंद योग	21	17.50
योग	120	100

समग्र अनुत्तीर्ण छात्रो की बुद्विलब्धि का प्रतिशतवार विवरण इस प्रकार है –

1. प्रतिभावान 0.83 प्रतिशत छात्र 6.67 प्रतिशत अत्युत्तम 5.83 प्रतिशत उत्तम प्रतिशत
   9.17 तीव्र बुद्वि के एंव 10.00 प्रतिशत छात्र पाए गए।
2. कम कुशल बुद्धि के 12.50 प्रतिशत छात्र पाए गए ।
3. अधिकाश छात्र मंद के 17.50 पाए गए।

अनुत्तीर्ण छात्राओं की बुद्धिलब्धि का पता लगाना

अनुत्तीर्ण छात्राओं की बुद्धिलब्धि का विश्लेषण सारणी 4.3 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी क्रमांक 4.3

अनुत्तीर्ण छात्राओं की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण

बुद्धिलब्धि के आधार पर श्रेणीकरण	समग्र अनुत्तीर्ण छात्राओं की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार विश्लेषण	
	संख्या	प्रतिशत
प्रतिभावान	1	0.83
अत्युत्तम	2	1.67
तीव्र	5	4.17
उत्तम	8	6.67
औसत	8	6.67
कम कुशल	16	13.33
मंद	25	20.83
योग	120	100.00

समग्र अनुत्तीर्ण छात्राओं की बुद्धिलब्धि का प्रतिशतवार विवरण इस प्रकार है –

1. प्रतिभावान 0.83 प्रतिशत छात्र 1.67 प्रतिशत अत्युत्तम 6.67 प्रतिशत उत्तम प्रतिशत 4.17 तीव्र बुद्धि के एवं 6.67 प्रतिशत औसत बुद्धि के छात्राएं पाई गई।
2. औसत से कम अर्थात् कम कुशल बुद्धि की 13.33 प्रतिशत छात्राएं पाई गई।

3. अधिकांश छात्राएं मंद बुद्धि की (20.83प्रतिशत) पाई गई।

अनुत्तीर्ण छात्र एवं छात्राओं की बुद्धिलब्धि श्रेणीनुसार तुलनात्मक विश्लेषण

अनुत्तीर्ण छात्र एवं छात्राओं की बुद्धिलब्धि का श्रेणीनुसार तुलनात्मक विश्लेषण सारणी 4.4 में प्रस्तुत किया जा रहा है–

सारणी क्रमांक 4.4

अनुत्तीर्ण छात्र एवं छात्राओं की बुद्धिलब्धि का श्रेणीवार तुलनात्मक विश्लेषण

बुद्धिलब्धि के आधार पर श्रेणीवार	छात्रों की बुद्धिलब्धि		छात्राओं की बुद्धिलब्धि	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
प्रतिभावान	1	0.83	1	0.83
अत्युत्तम	8	6.67	2	1.67
उत्तम	7	5.83	8	6.67
तीव्र	11	9.17	5	4.17
औसत	12	10.00	8	6.67
कम कुशल	15	12.50	16	13.33
मंद	21	17.50	25	20.83
योग	120	100.00	120	100.00

उपरोक्त सारणी से निम्न परिणाम परिलक्षित होते है–

1. समग्र अनुत्तीर्ण छात्रों (120) तथा छात्राएँ (120) में क्रमशः 0.83 प्रतिशत छात्र एवं (0.83 प्रतिशत) छात्राएँ प्रतिभावान् 6.67 प्रतिशत छात्र एवं 1.67 प्रतिशत छात्राएँ अत्युत्तम 5.83 प्रतिशत छात्र एवं 6.67 प्रतिशत छात्राएँ उत्तम बुद्धि के 9.17 प्रतिशत छात्र एवं 4.17 प्रतिशत छात्राएँ तीव्र बुद्धि के तथा 10 प्रतिशत छात्र एवं 6.67 प्रतिशत छात्राएँ औसत बुद्धि के पाए गए।
2. छात्रों में कम कुशल बुद्धिलब्धि के छात्र 12.50 प्रतिशत एवं मंद बुद्धि के छात्र 13.33 प्रतिशत पाए गए, जबकि छात्राओं में कम कुशल बुद्धिलब्धि की छात्राएँ 17.30 प्रतिशत एवं मंद बुद्धि की छात्राएँ 20.83 प्रतिशत पाई गई।

निष्कर्ष –

1. उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि अनुत्तीर्ण विद्यार्थी बुद्धिलब्धि की दृष्टि से कमजोर पाये गये, छात्रों की बुद्धिलब्धि छात्राओं से ठीक पाई गई।
2. अत्युत्तम बुद्धिलब्धि में छात्रों की संख्या छात्राओं से अधिक पाई गई।
3. तीव्र एवं औसत बुद्धिलब्धि में छात्रों की संख्या छात्राओं से अधिक पाई गई।
4. अधिकांश अनुत्तीर्ण छात्र/छात्राओं की बुद्धिलब्धि कम कुशल अथवा मंद पाई गई।
5. कम कुशल एवं मन्द बुद्धिलब्धि की श्रेणी में छात्राओं की संख्या छात्रों से अधिक पाई गई।

अनुत्तीर्ण छात्र–छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण के मध्यमान के आधार पर विश्लेषण –

समग्र अनुत्तीर्ण छात्र–छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण का मध्यमान के आधार पर विश्लेषण सारणी 4.5 में प्रस्तुत किया जा रहा है–

सारणी क्रमांक 4.5

अनुत्तीर्ण छात्र–छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण का क्षेत्रवार मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

क्षेत्र	कथनों की संख्या	छात्र		छात्राएँ	
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन
माता स्वीकारोक्ति	27	15.63	3.61	16.38	2.90
पिता स्वीकारोक्ति	25	15.63	3.49	15.36	2.98
माता एकाग्रता	21	12.20	2.57	12.28	2.64
पिता एकाग्रता	20	11.03	3.01	10.71	3.00
माता अस्वीकारोक्ति	31	14.82	4.51	14.38	4.54
पिता अस्वीकारोक्ति	26	12.41	4.17	12.21	4.53
कुल	150	81.61	11.36	81.00	11.95

उपरोक्त सारणी से निम्न परिणाम परिलक्षित होते है –

पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के क्षेत्र 1 माता स्वीकारोक्ति पर अनुत्तीर्ण छात्र तथा छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 15.63 तथा मानक विचलन 3.61 तथा 2.90 प्राप्त हुआ। पारिवारिक सम्बन्ध प्रश्नावली के इस क्षेत्र के 27 कथनों पर व्यक्त राय के प्राप्ताकों के मध्यमान पर माता स्वीकारोक्ति छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में अधिक पाई गई। अनुत्तीर्ण छात्राओं की माताएँ अपने पुत्रियों को छात्रों की अपेक्षा अधिक स्वीकार करती है।

अनुत्तीर्ण छात्र–छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण का तुलनात्मक विश्लेषण

समग्र अनुत्तीर्ण छात्र–छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण का मध्यमान, मानव विचलन एवं टी–मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण सारणी 4.6 में प्रस्तुत किया जा रहा है–

सारणी क्रमांक 4.6

अनुत्तीर्ण छात्र–छात्राओं के पारिवारिक पर्यावरण का क्षेत्रवार तुलनात्मक विश्लेषण

क्षेत्रवार	छात्र		छात्राएँ		टी–मान	05/01 स्तर पर सार्थकता
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
माता स्वीकारोक्ति	15.63	3.61	16.38	2.90	1.77	सार्थक नहीं
पिता स्वीकारोक्ति	15.53	3.49	15.06	2.98	0.72	सार्थक नहीं
माता एकाग्रता	12.20	2.57	12.28	2.64	0.14	सार्थक नहीं
पिता एकाग्रता	11.30	3.01	10.71	3.00	0.54	सार्थक नहीं
माता अस्वीकारोक्ति	14.82	4.51	14.38	4.54	0.49	सार्थक नहीं
पिता अस्वीकारोक्ति	12.41	4.17	12.21	4.53	0.23	सार्थक नहीं
कुल	81.61	11.36	81.00	11.95	0.26	

स्वतन्त्रता के अंश 238 पर, 0.05 स्तर का मान 1.97, 0.01 स्तर का मान 2.60

अनुत्तीर्ण छात्रों के लिए निर्देशन कार्यक्रम –

1. विद्यार्थियों के माता–पिता की अस्वीकारोक्ति विद्यार्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है। बच्चों के साथ पारिवारिक सम्बन्धों को माता–पिता को ध्यान में रखना चाहिये। माँ बालक की प्रथम पाठशाला होती है, माता–पिता अपने बच्चों की परवरिश पर बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। बच्चों को माता–पिता बच्चों को कष्टित न करें, इसके लिए ऐसे बच्चों के माता–पिता को समय–समय पर प्राचार्य को विद्यालयों में अभिभावक बैठक में बुलाकर अपने बच्चों के लालन–पालन में आने वाली कमी तथा उसके परिणामों से अवगत कराना चाहिये।
2. माता–पिता को बुद्धि परीक्षण तथा अन्य साधनों से यह पता लगाना चाहिये कि क्या उनकी संतान कम बुद्धिलब्धि की है ? प्रस्तुत शोध में उत्तीर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि सामान्य तथा सामान्य से कम पाई गई, उनके कारणों का माता–पिता को पता लगना चाहिये। विद्यालय के शिक्षकों को भी बुद्धिलब्धि कम होने के कारणों का पता लगाकर अभिभावक को अवगत करना चाहिये।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. प्रस्तुत शोध माध्यमिक विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों पर किया गया, इसी तरह इन्हीं चरों अथवा अन्य चरों को लेकर प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के उत्तीर्ण विद्यार्थियों पर भी शोधकार्य किया जा सकता है।
2. इसी तरह का शोधकार्य तथा निजी विद्यालयों के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों को लेकर किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श बहुत सीमित है, इसी तरह का शोध बड़े न्यादर्श को लेकर किया जा सकता है।
4. शोधकर्ता ने समयाभाव के कारण अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के बुद्धिलब्धि एवं पारिवारिक समस्याओं का ही अध्ययन किया। इस अध्ययन को और विस्तार से अन्य घटकों, शारीरिक घटक, सामाजिक एवं संवेगात्मक घटक, व्यक्तिगत एवं मानसिक घटक, अधिगम कठिनाईयों से सम्बन्धित घटकों तथा अधिक न्यादर्श पर करने की आवश्यकता है।
5. अनुत्तीर्ण किशोर विद्यार्थियों के अध्ययन आदतें एवं मनोवृत्ति, शैक्षिक रूचियों, उपलब्धि प्रेरणा, स्वधारणा, सुरक्षा–असुरक्षा, समायोजन, स्वभावगत विशेषताओं आदि पर शोध कार्य किया जा सकता है।
6. कुछ विद्यार्थियों पर गहन अध्ययन के लिए केस स्टडी की जा सकती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में शोध सारांश, मुख्य निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं। साथ ही अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए निर्देशन कार्यक्रम हेतु सुझाव एवं भावी शोध हेतु भी सुझाव प्रस्तुत किए गए है। शोधकर्त्ता को आशा है कि प्रस्तुत शोधकार्य अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों, अध्यापकों एवं प्राचार्यों का मार्ग प्रशस्त करेगा।

प्रस्तुत शोध बालकों के शैक्षिक उपलब्धि, पारिवारिक वातावरण, अभिभावक सम्बन्ध व बुद्धिलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव पर कोई कार्य नहीं हुआ है। इससे इसके अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *अग्रवाल, राम नारायण, ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा*
2. *एलिस, आर.एस.1951, एजुकेशन साइकोलॉजी*

3. *भाटिया, निर्मल, ''शिक्षा में मनोविज्ञान के सिद्धान्त और प्रविधियाँ राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1978*
4. *भटनागर, सुरेश, शिक्षा मनोविज्ञान, राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1985*
5. *भटनागर, सुरेश, शिक्षा में मनोविज्ञान, इण्टर नेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 1980*
6. *भार्गव, ऊषा, किशोर मनोविज्ञान*
7. *गेरेट गेनरी, 'शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी', कल्याण पब्लिकशनर्स, 1978*
8. *जायसवाल, सीताराम, ''शिक्षा मनोविज्ञान'', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1967*
9. *क्रो एण्ड क्रो, 1965, एजुकेशन साइकोलॉजी।*
10. *शर्मा, आर.ए. 1990, शिक्षा तकनीकी लॉयल बुक डिपो, मेरठ*
11. *शर्मा, गणपत राय, व्यास, ''अधिगम और विकास के मनोसामाजिक आधार हरिशचन्द्र*
12. *वर्मा, डॉ. रामपाल सिंह, शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान 2002 उपाध्याय, प्रो. राधा विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा वल्लभ।*
13. *वर्मा, प्रीति, श्रीवास्तव, डी. मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा*
14. *वाजपेजी, एस.आर., सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण*
15. *व्यास, हरिशचन्द्र, कैलाश शिक्षण अधिगम एवं विकास का मनोविकास सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ*
16. *चौहान, एस.एस. (1995) उच्च शिक्षा मनोविज्ञान विकास, नई दिल्ली पब्लिशिंग हाउस।*